मध्य प्रदेश की सहरिया जनजाति – संक्षिप्त अध्ययन

Dr. Shalini gupta [Assistant professor] HOD Department of History Incharge professor of Swami Vivekananda career guidance cell, Govt- GSV collage Mungaoli Ashoknagar-
E-mail-sg15280gsv@gmail.com Mobile no- 9826209781

शोध सारांश – भारत में जनजातियों का आवास मूलतः दक्षिण भारत, दक्षिण का पठार तथा मालवा का पठार रहा है। सदियों से पिछड़ी ये जनजातियां आज आधुनिकता की दौड़ में अत्यंत पीछे हैं। इन जनजातियों का सामाजिक, आर्थिक विकास के साथ–साथ राजनीतिक विकास भी आवश्यक हो गया है। राजनीतिक रूप से इन जनजातियों को आधुनिक समाज से जुड़ने के लिए अनेक संवैधानिक प्रावधान भी किए गए हैं। राज्य सरकार ने इन जनजातियों की विशेष पहचान कर एक अनुसूची का निर्माण किया है ताकि इन वर्गों को सरकारी योजनाओं का समुचित लाभ प्राप्त हो सके।

शब्द कुंजी–परिवार, निवास, आभूषण, भोजन, वेशभूषा, धार्मिक स्थिति, देवी–देवता, धार्मिक संस्कार, आर्थिक स्थिति।

प्रस्तावना – भारतीय समाज में विभिन्न जनजातियों का पाया जाना हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। वर्तमान युग की खोज उपभोगवाद पर आधारित है किंतु आदिम इतिहास के संदर्भ में आदिम जनजातियों का अध्ययन करना भी आधुनिक समाज की आवश्यकता है। ये आदिवासी जनजातियां जंगलों में निवास करती हैं और जंगल इनका जीवन है तथा आधुनिकता की चकाचौंध से यह कोसों दूर है। कभी–कभी ऐसा प्रतीत होता है कि यह जनजातियां अपने जंगली वातावरण में ही मदमस्त जीवन यापन करने के लिए बनी है। भारत के दुर्गम क्षेत्रों में वर्तमान में भी अनेक ऐसे मानव समूह है जो हजारों वर्षों से शेष विश्व की सभ्यता और संस्कृति से दूर होकर अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की अलग पहचान बनाए हुए हैं। यह मानव समूह बीहड़, जंगलों, मरुस्थलों, पहाड़ों, ऊंचे पर्वतो के उन अंचलों में निवास करते हैं जिन्हें आधुनिक समाज की अर्थदृष्टि उत्पादक समझती है। भारतवर्ष के ऐतिहासिक अन्वेषण से विदित है कि भारत जनजातीय संस्कृति से समृद्ध देश है। पुरातात्विक और साहित्यिक प्रमाण इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत के मूलनिवासी जनजातीय वर्ग के थे। प्राचीन काल से वर्तमान आधुनिक सभ्यता के दौर तक यह जनजातियां अपनी संस्कृति और सभ्यता को जीवंत रखने में सफल रहीं हैं। संघर्ष और संक्रमण के दौर में भी ये जनजातियां अपने सामाजिक अस्तित्व को बचाने में पूर्णतरू सफल रहीं हैं। भारत के प्रायरू सभी आदिवासी बृहद भारतीय समाज के अभिन्न अंग रहे हैं। इस आबादी के पृथक वनों में रहने के कारण उन्हें भारतीय समाज में पांचवें वर्ण के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस तथ्य के साक्षी हमारे विभिन्न शास्त्रीय ग्रंथ हैं। मध्यप्रदेश में जनजातियों की संख्या अन्य प्रदेशों जैसे गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि की तुलना में अधिक है। 2001 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश में सबसे अधिक जनजातियां निवास करती है।

सहरिया जनजाति– सहरिया जनजाति मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों में से एक है। सहरिया जनजाति का समुचित विकास करना मध्य प्रदेश सरकार की प्रमुखता है। सहरिया जनजाति मूलतः मध्य प्रदेश के गुना, शिवपुरी, दतिया, ग्वालियर, अशोकनगर, मुरैना, भिंड, शिवपुरी, सागर, दमोह, विदिशा, टीकमगढ़ एवं छतरपुर में निवासरत है। सहरिया भारत की प्रमुख आदिम जनजातियों में आती है। सहरियाओं को खुटिंया, पटेल राऊत या रावत के नाम से भी संबोधित किया जाता है। इन नामों के संबोधन से यह अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं। रसेल एवं हीरालाल ने भी सहरियाओं के लिए खुंटिया और रावत सम्मान सूचक शब्द का प्रयोग किया है। विभिन्न शोध अध्ययन और अनुसंधान से प्राप्त प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सहरिया कोलारियन मुंडा परिवार के सदस्य रहे हैं। निरंतर परिवर्तन से यह जनजाति अपनी मूल पहचान को बचाने में असमर्थ सिद्ध हो रही हैं।

सहरिया जनजाति की उत्पत्ति से संबंधित विचार – सहरिया जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में कोई एक निश्चित विचारधारा उपलब्ध नहीं है। पुराणों और लोक कथाओं से भी इनकी जानकारी प्राप्त होती है, जिसका कोई निश्चित आधार नहीं है। सहरिया जनजाति के लोगों के पास स्वयं का कोई लिखित इतिहास नहीं है। इस जनजाति के बुजुर्गों को भी जो जानकारी है, वह भी अस्पष्ट और अधूरी है। सहरिया जनजाति के विषय में लोक कथाओं और पुराणों से भी जानकारी प्राप्त होती है। एक धारणा यह है कि सहरिया जनजाति के लोग बाल्मीकि को अपना प्रथम पितृ पुरुष मानते हैं। इनका मानना है कि बाल्मीकि भील जाति के थे, अतःवे भीलों के सहोदर है। राजस्थान के कोटा जिले की शाहाबाद तहसील की सीताबाड़ी में सहरिया आदिवासियों का विशाल मेला लगता है, जहां पर स्थित वाल्मीकि मंदिर पर सैकड़ों सहरिया दर्शन करने पहुंचते हैं ।

एक अन्य कथा के अनुसार सहरिया तथा भील दो सगी बहनों की संतान हैं। बड़ी बहन भीलनी से उत्पन्न संतान भील तथा छोटी बहन सेरिया से उत्पन्न संतान सहरिया कहलाए। सहरिया अपना मूल स्थान मालवा को बताते हैं। सहरिया शबरी से भी अपनी उत्पत्ति बताते हैं। सबरी से उत्पन्न होने के कारण शबर, सबर, और सहरिया कहलाए।

लोक कथाओं एवं किंवदंतियों के आधार पर स्पष्ट होता है कि सहरिया जंगल में रहने वाला एक जनजाति समुदाय है। सहरिया शब्द की व्युत्पत्ति में प्रयोग किया गया शब्द सा का तात्पर्य सहचर तथा हरिया का अर्थ शेर से होता है। अर्थात शेर का सहचर, जो सहारिया के लिए उपयुक्त शब्द है।

निवास – सामान्यतारू सहरिया किसी गांव या शहर के आस–पास प्रथक समूह बनाकर रहना पसंद करते हैं। जंगलों में ऊंची पहाड़ियों की वजह समतल मैदानी भागों में परंपरागत रूप से समूहों के मकान बनाकर रहते हैं। कभी कभी यह पहाड़ों पर ही मकान बना लेते हैं। मकानों की बसाहट तीन ओर से अंग्रेजी के उलटे यू आकार में होती है। एक ओर से आने जाने का रास्ता होता है। बीच में चौक होता है जिसमें बंगला यानि अतिथि घर होता है।

इनके गांव की बसाहट का कोई निश्चित प्रकार नहीं होता है। इनके बसावट को ही सहराना कहा जाता है। इसकार इस जनजाति के गांव को सेहराना कहा जाता है। सहरिया के गांव अन्य गांवों से अलग प्रकार के होते हैं। किसी भी गांव के पास कुछ झोपड़ियां बनाकर ये इकट्ठे बस जाते हैं। एक सहराने में केवल एक ही प्रकार के समूह निवास करते हैं। ये घर के बाहर पशुओं को रखने के लिए एक बागड़ का बाड़ा बना लेते हैं। इनके गांव की रचना घनी बस्ती जैसी नहीं होती है बल्कि ये फैले हुए घर बनाते हैं। ज्यादातर बस्तियां गोलाकार होती हैं। गांव के बीच में एक मैदान होता है। उसमें यह एक गोलाकार बैठक घर बनाते हैं। बैठक घर को वे बंगला कहते हैं। यह एक अतिथि घर होता है। इसमें जाति पंचायत की बैठक का भी आयोजन किया जाता है। सहरियाओं का जीवन स्तर अत्यंत साधारण है। भौतिक साधनों की कमी है, अथवा इनके प्रयोग से अनभिज्ञ है। पौष्टिक भोजन की कमी एवं शारीरिक स्वच्छता के अभाव के कारण यह विभिन्न बीमारियों से ग्रसित रहते हैं। अंधविश्वास एवं जादू टोना में विश्वास के कारण तथा इलाज के अभाव में अकाल मृत्यु को प्राप्त होते हैं। सामान्यतः सहरियों को तन ढकने के लिए वर्ष में एक जोड़ी कपड़ों पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

परिवार– सहरिया जनजाति के लोग एकल परिवार में रहना पसंद करते हैं। सहरिया जनजाति में जब किसी लड़के की शादी हो जाती है तो घर के बगल में ही उसके लिए दूसरी झोपड़ी बना दी जाती है। जिससे पारिवारिक झगड़े नहीं हो। भानु व्यास उदय के अनुसार सहरिया जनजाति के लोग बहुविवाही होते हैं। एक सहरिया दो तीन पत्नियां रख सकता है अर्थात एक से अधिक विवाह कर सकता है। सहरिया जनजाति के परिवार पितृसत्तात्मक होते हैं। पिता परिवार का मुखिया होता है। घर का प्रत्येक काम उसकी इच्छा और सहमति से ही होता है। पिता के बुजुर्ग हो जाने या मृत्यु होने पर परिवार का बड़ा पुत्र सदस्य ही घर का मुखिया होता है। सहरियाओं में पारिवारिक झगड़ों का निपटारा घर के सदस्यों द्वारा ही कर लिया जाता है। सहारिया जाति के लोगों में जमीन, घर या संपत्ति जो नाममात्र की होती है, का बंटवारा घर के सदस्यों के द्वारा ही कर लिया जाता है।

आभूषण – सहरिया स्त्रियां गहनों की बहुत शौकीन होती हैं। ये सिर पर चांदी के झूला या राखड़ी, नाक में नथ, कान में झुमके पहनती हैं। जो चांदी या पीतल के बने होते हैं। हाथ में पीतल या लाख का चूड़ा भी पहनती हैं। महिलाएं प्राय अपने शरीर में गोदना गुदवाती हैं जो विभिन्न आकार के होते हैं सहारिया पुरुषों को गोदना गुदवाना वर्जित होता है।

भोजन– सहरिया जनजाति के लोगों का मुख्य भोजन ज्वार, मक्का, गेहूं और बाजरा है जिससे मोटी रोटी या चपाती यह बनाते हैं। इस जनजाति के लोग महुआ को उबालकर खाने के शौकीन होते हैं। मांस, मछली, मुर्गी, अंडे या शिकार किए गए जानवरों के मांस खाते हैं। धूम्रपान के लिए बीड़ी का प्रयोग किया जाता है। त्यौहार, उत्सव व शादी ब्याह के समय यह लोग महुए से बनी शराब पीते हैं। डॉक्टर टीवी नायक के अनुसार प्राकृतिक रूप से उगने वाले कंदमूल फल, हरी पत्तियां खाने का सहरियाओं का अपना प्रिय शौक है। वनस्पतियों का विस्तृत ज्ञान प्रत्येक सहारिया को पुरखों से विरासत में मिला है।

सहरियाओं का जीवन स्तर अत्यंत साधारण हैं। इनके जीवन में भौतिक साधनों का अभाव है। इसके साथ ही इनके प्रयोग से भी अनभिज्ञ है। पौष्टिक भोजन की कमी और शारीरिक स्वच्छता की कमी के कारण यह विभिन्न बीमारियों व रोगों से ग्रसित हो जाते हैं। अंधविश्वास व जादू टोंनों के कारण इलाज के अभाव में अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। सामान्यतरू सहरियाओं को तन ढंकने के लिए वर्ष में 1 जोड़ी कपड़ों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। डॉक्टर नायक के अनुसार स्त्री पुरुष नियमित रूप से न तो नहाते हैं और ना ही अपने कपड़ों को धोने की परवाह करते हैं, जो उनके पास बहुत थोड़े से होते हैं।

वेशभूषा–

सलका– सहरिया पुरुषों की अंगरखी होती है।

खफ्टा– सहरिया पुरुषों का साफा होता है।

पंछा–सहरिया पुरुषों की धोती।

रेजा– सहारिया विवाहित महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र।

धार्मिक स्थिति– आदिवासी समूह धार्मिक रूप से हिंदू देवी–देवताओं की पूजा करते हैं। ब्रह्मा, शिव, सूर्य, शिव, सूर्य, चंद्र, जल, पहाड़, पर्वत, नदी आदि की पूजा करते हैं। सहारियायों ने हिंदुओं के लंबे समय के प्रभाव के कारण हिंदू धर्म की बहुत सी बातें अपना लीं है। ये अपने आप को प्रायारू हिंदू कहते हैं। वर्तमान में मुश्किल से इनमें जनजाति के लक्षण दिखते हैं। हिंदू जाति व्यवस्था के व्यापक प्रभाव में इनका पारंपरिक व्यवसाय और स्थान पूरी तरह से समाहित हो गया है। रसेल एवं हीरालाल ने सबर लोगों के धर्म के बारे में लिखा है कि सबर लोगों में कई नामों से भवानी की और दूल्हा देव की जो कि एक युवा व थे, जिन्हें शेर ने मारा था, की पूजा की जाती है। कुछ स्थानों पर दूल्हा देव को रसोई में स्थापित किया जाता है। इसके लिए एक कहावत भी प्रचलित है–जैं चूल्हा तैं दूल्हा! सबर अच्छे गुनिया भी माने जाते हैं। सहरिया स्थानीय देवताओं पर अधिक विश्वास करते हैं। सुख–दुख व बीमारी के समय में भी उन्हीं देवताओं के पास जाते हैं। सहारियाओं के देवी देवता–ठाकुर देव–बच्चों और बड़ों की रक्षा करने वाली ग्राम देवता है। रोगी के ठीक होने पर देवता को दारू और बकरे की बलि चढ़ाई जाती है। भैरव देव–भैरव देव से बांझ स्त्रियों पुत्र प्राप्ति की कामना करती हैं। भैरव देव प्रत्येक गांव में स्थापित रहते हैं।

नाहर देव – नाहरदेव की स्थापना जंगल में होती है। नाहर का अर्थ शेर है। सहारिया मानते हैं कि नाहरदेव उनके पालतू जानवरों की रक्षा करते हैं।

दरेंठ देव – सहारिया अपने बच्चों का मुंडन संस्कार दरेंठ देव के सम्मुख करते हैं।

कारस देव – यह देव सर्प या बिच्छू के जहर को उतारने वाले देवता के रूप में पूजे जाते हैं। कारस देव खड्या गोत्र के कुलदेवता है।

भूमिया देव – यह ग्राम देवता है भूमिया देव गांव के संरक्षक देव है। भूमिया देव की स्थापना किसी पेड़ के नीचे गांव के छोर पर की जाती है। भूमिया देव की पूजा से बीमारी गांव में नहीं आती है,ऐसी मान्यता सहारिया लोगों में होती है।

हीरामन देव – मनुष्य या पशु को सर्प काटने पर हीरामन देव के नाम से बंद बांधे जाते हैं।

बीजासेन माता – यह बच्चों की रक्षा करने वाली और सभी प्रकार के कष्ट को दूर करने वाली माता है।

कैला माता – कैला माता कार्य सिद्ध करने वाली देवी है।

कंकाली माता – यह महामारी या दैवी प्रकोप से बचाने वाली माता है।

सहरिया जनजाति के लोगों को भूत प्रेतों की बाधाओं का अक्सर भय बना रहता है यह लोग उसकी रोकथाम के लिए भूत प्रेतों से बड़ी औघड़ शक्ति के देवता जिन्न की पूजा प्रति 3 वर्ष में करते हैं सहारिया ओं में यह मान्यता होती है कि यदि जिन्न की पूजा करके उसे प्रसन्न नहीं रखा गया तो वह लोगों को अकारण ही सताऐगा।

संस्कार – सहरिया जनजाति के संस्कार आदिवासी समुदाय में पाए जाने वाले संस्कारों के लगभग समान ही है। विवाह, गर्भधारण, धार्मिक त्योहारों के समय इस जनजाति के लोग विभिन्न प्रकार के संस्कार करते हैं। जैसे गर्भधारण के बाद सहरिया जनजाति की महिलाओं को कई निषेधों का पालन करना पड़ता है। जैसे अकेले कुआं नदी, बावड़ी नाले आदि पर नहीं जाना, सूर्य ग्रहण एवं चंद्र ग्रहण नहीं देखना, श्मशान भूमि में नहीं जाना। सहरियाओं में बच्चे के जन्म के दिन बहन को विशेष रूप से बुलाया जाता है। शिशु जन्म के 10 वें दिन या सुविधा अनुसार घर का मुखिया शिशु के नामकरण संस्कार के लिए अपने परिजनों को तेल, चावल भेजकर निमंत्रण देते हैं। आदिवासी समूह धार्मिक रूप से हिंदू देवी देवताओं की पूजा करते हैं। ब्रह्मा, शिव, सूर्य चंद्र जल पहाड़ नदी आदि की पूजा करते हैं हिंदुओं के लंबे प्रभाव के कारण उन्होंने हिंदू धर्म की बहुत सी बातें अपनी हैं सहरिया प्राया अपने आप को हिंदू कहते हैं सहरिया लोग सर्वाधिक हिंदू संस्कृति के प्रभाव में आए हैं।

आर्थिक स्थिति – सहारिया लोगों में आर्थिक उपार्जन के लिए कोई खास उद्योग या परंपरागत संसाधनों का विकास नहीं हो पाया है परंपरागत धंधे के रूप में कृषि मजदूरी शिकार वनस्पति संग्रहण महुआ तेंदूपत्ता सूखी लकड़ी को एकत्रित करना व बेचना ही प्रमुख है।

डॉक्टर रसेल एवं हीरालाल के अनुसार सबरों का मुख्य धंधा वन उत्पाद इकट्ठा करना और खेती है। यह मधुमक्खी के छत्ते से मधु निकालने में बेहद चतुर होते हैं। सबंर ही काली मक्खियों को उनके छत्तों से बाहर भगा सकते हैं। इस जाति की पूर्वी शाखा बुंदेलखंड के साओंर लोगों से अधिक सभ्य होती है। साओंर अभी भी नोंकदार छड़ी की सहायता से जुआरी बोते हैं और कहते हैं कि यह औजार उन्हें खेती के लिए महादेव ने दिया है।

वर्तमान में सहरिया जनजाति की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। सभी सहरिया जाति के लोगों के पास न तो कृषि योग्य भूमि है, और जिनके पास है वे परंपरागत प्रकार से कृषि करते हैं जिससे उपज कम होती है। इस कारण से वे अपने परिवार का पालन पोषण करने में असमर्थ होते हैं। हालांकि शहर में रहने वाली सहरिया जनजाति के लोगों ने कल–कारखानों में काम करना शुरू कर दिया है। इसके साथ ही यह मजदूरी, रिक्शा चलाने, हम्माली में भी क्रियाशील हो गए हैं। सहरिया जनजाति के लोगों का सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक आधार जंगल से जड़ी–बूटी इकट्ठा करना और उसको बेचना है। इन कार्यों में इस जनजाति के लोगों को युगो युगो से कुशलता प्राप्त है। परंतु वे इन जड़ी–बूटियों से किसी विशेष प्रकार की दवाई बनाने में समर्थ नहीं होते हैं इसीलिए यह लोग जड़ी बूटियों को सस्ते दामों में ही लोगों को बेच देते हैं। बरसात में अनेक औषधियां पत्ती के रूप में मिलती है। बरसात में अधिकांशतरू पत्तियों का चयन किया जाता है। वर्षा के दिनों में अपों की पत्ती, क्लों की पत्ती, बड़ी बिलैया छोटी बिलैया के फूल और पत्ते, बैल–बिलोरा की बेल, भिलाई कांद, शेष मुसरी जमीन में से कुवां का वकुला बेल आदि और ठंड के दिनों में सोना पौधे की जड़, चितावर की जड़, बड़ी छोटी आंवरी, सयरे का फल, धतूरा, अकौवा का फूल, पत्तस सगा की जड़, बन्ने का बकुला, बर्रान की फली, शीशौन की फली, खैर की फली, दूधी की फली, फाड़कर का बकुला, टोकनी बनाना, झाड़ू बनाना, रस्सी बुनना आदि सहरियों के परंपरागत धंधे हैं।

संदर्भ–

1– मजूमदार डी.एन.,रेस एंड कल्चर ऑफ इंडिया एशिया पब्लिशिंग हाउस बोम्बे,1958,पृ.355।

2– भटनागर एस.के.,गाधेर,ए.विलेज सर्वे,सेंसस आफ इंडिया.1961,1968।

3– निरपुणे बसंत,सहरिया, मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद भोपाल का प्रकाशन,2001–2002,पृ.8।

4– गुप्त डॉ.जगदीश, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला,म.प्र.ग्रंथ अकादमी, भोपाल,पृ.10,33।

5- Village survey & cencus of India1961-vol 3 no10

6– रसेल और हीरालाल, द ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ द सेंट्रल प्राविंनेस आफ इंडिया।

7– नायक,की.का.ली.,द सहरिया,पृ. 6,12,16।

8– भानु व्यास उदय,सहरिया विकास अभिकरण एक मूल्यांकन,पृ.31।

Weblinks

1- https://samanyagyanedu-in

2- https://www-tribal-mp-gov-in

3- https://www-janoisko-com